कला तथा स्थापत्य

कला की दृष्टि से मध्य काल बड़े महत्व का है। इस काल की वास्तुकला बड़े-बड़े मंदिरों के निर्माण के रूप में प्रकट हुई। उसका एक कारण यह था कि पौराणिक धर्म में मन्दिरों और उनमें रखी जाने वाली मूर्तियों का बड़ा महत्व था। भागवत, शैव, शाक्त और अन्य सम्प्रदायों के अनुयायी अपना यह कर्तव्य समझते थे कि वे बड़े-बड़े मन्दिर बनायें और पुण्य के भागी बनें।

स्थापत्य कला

भारतीय स्थापत्य कला में मन्दिरों की तीन शैलियाँ विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं। उत्तरी भारत में हिमालय से विन्ध्य तक नागर शैली प्रचलित रही है।

विन्ध्य से कृष्णा नदी तक की शैली को बेसर शैली कहते हैं। कृष्णा नदी के दक्षिण से कन्याकुमारी तक द्रविड़ शैली का विकास हुआ है।

इस काल में अनेक भव्य मंदिर, मूर्तियाँ एवं सुदृढ़ दुर्गों का निर्माण किया गया। इस काल के मन्दिरों के भव्य नमूने भुवनेश्वर, खजुराहो, आबू पर्वत (राजस्थान) तथा गुजरात से प्राप्त होते हैं। इनका विवरण निम्नवत् है:—

(1.) उड़ीसा के मन्दिर:
भुवनेश्वर, पुरी तथा कोणार्क में हैं जिनका निर्माण 8वीं से 13वीं शताब्दी के बीच हुआ।

(2.) गुजरात तथा राजस्थान के मन्दिर:
चालुक्य (सोलंकी) राजाओं के काल (941–1244 ई०) में गुजरात के अन्हिलवाड़ तथा राजस्थान के आबू पर्वत पर कई भव्य मन्दिरों का निर्माण करवाया गया।

(3.) बुन्देलखण्ड के मन्दिर: बुन्देलखण्ड का प्रमुख

Cont....

स्थल मध्य प्रदेश के छतरपुर जिले में स्थित खजुराहो नामक स्थान है। यहाँ चन्देल राजाओं के समय 9वीं शताब्दी से लेकर 12वीं शताब्दी तक अनेक सुन्दर तथा भव्य मन्दिरों का निर्माण करवाया गया। खजुराहो के मन्दिरों में 'कन्दरिया महादेव' मन्दिर सर्वश्रेष्ठ है।

चित्रकला :

इस काल में चित्रण शैली में कई शैलियाँ चल पड़ी, जैसे - गुजरात शैली, राजपूताना शैली, कांगड़ा शैली, कश्मीर शैली इत्यादि।

गुजरात शैली में जैन जीवन पद्धति और धर्म से सम्बन्धित चित्र हैं। राजपूत शैली में रास - लीला, राग - रागिनी नायक - नायिका भेद सम्बन्धी अनेक चित्र मिलते हैं।

— Dr. Madan Paswan, History.